in which harmful effects of this drug have been found in India? And if such harmful effects have been found, what is the reaction of the Minister?

SHRI RAM NIWAS MIRDHA: Sir, I have already mentioned about the survey of 5,000 patients done by Dr. Wadia. And he said that there was not adverse reaction, and he confidently said this and his view was concurred by other experts also. But, as I said, let us not prolong the debate. I have assured the House that the whole thing will be re-examined with whatever expertise is available to us, and what the hon. Members said, that will be considered.

MR. CHAIRMAN: Question No. 264.

*246. [*The questioner (Shri Satya Prakash Malaviya) was absent. For answer* vide *col.* 35-36 infra]

MR. CHAIRMAN: Question No. 256.

*265. [*The questioner (Shri Ram Naresh Yadav and Shri Ram Jethmalani). were absent. For answer* vide *Col.* 36-38 infra.]

Mr. Chairman: Question No. 266.

झांसी स्थित आयुर्वेदिक अनुसंधान केन्द्र

*266. **डा. गोविन्द दास रिछारिया :** क्या **स्वास्थ्य और परिवार कल्याण** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) केन्द्रीय सरकार द्वारा झांसी में खोले गये आयुर्वेदिक अनुसंधान केन्द्र द्वारा किये गये कार्य का ब्यौरा क्या है ;

(ख) इस समय कौन-कौन सी परियोजनाएं चल रही हैं तथा किन-किन परियोजनाओं के भविष्य में आरम्भ किये जाने की संभावना है ; और

(ग) इस केन्द्र के भावी विस्तार और अगली पंचवर्षीय योजनावधि में इसे उच्च अध्ययन और अनुसंधान के केन्द्र के रूप में विकसित करने के संबंध में सरकार की क्या योजनाएं हैं ?

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री (कुमारी सरोज खापर्डे) : (क) से (ग) एक विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है ।

विवरण

केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद् का क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र (आयुर्वेद), झांसी परिषद् की विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक केन्द्रीय औषध डिपो के रूप में कार्य कर रहा है । यह केन्द्र देश के लगभग सभी राज्यों में कार्य कर रहे चिकित्सा-वानस्पतिक अन्वेषण दलों के परिषद् के नेट वर्क के माध्यम से उपयुक्त कच्ची औषध सामग्री को एकत्र करता है । इसके अतिरिक्त यह केन्द्र उद्यानों में पैदा करके और केन्द्र के चिकित्सा परिचर्या कार्यक्रम में उपयोग के लिए परिषद् की अन्य सर्वेक्षण यूनिटों से प्राप्त एकल औषधि वाली दवाइयां भी तैयार करता है इस केन्द्र ने अधिकृत औषध नमूनों और पादप प्रजातियों का एक जड़ी-बूटी भण्डार और म्यूजियम भी स्थापित किया है । इस केन्द्र के निम्नलिखित कार्यक्रम हैं –

(i) कुछ-एक रोगों /स्थितियों में उपचार में आयुर्वेदिक दवाइयों की प्रभावकारिता का मूल्यांकन करने के लिए अंतरंग रोगी विभाग स्तर पर नैदानिक अनुसंधान अध्ययन आरम्भ करना ।

(ii) मोबाइल क्लीनिकल रिसर्च यूनिट के अन्तर्गत सर्वोन्मुख सर्वेक्षण एवं निगरानी कार्यक्रम का विस्तार करना और सामुदायिक स्वास्थ्य परिचर्या अनुसंधान कार्यक्रम के अन्तर्गत एक गांव को अपनाना ।

(iii) औषधीय पादपों, उनके भण्डारण, संरक्षण और आपूर्ति के लिए गहन खेती करना ।

(iv) क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, ग्वालियर में कार्य कर रहे औषधीय पादप

सर्वेक्षण यूनिट के सहयोग से इस क्षेत्र में चिकित्सा वानस्पतिक सर्वेक्षण करना और परिषद् को जरूरतों के अनुसार कच्चो औषधों को आपूर्ति ।

आठवीं योजना कार्यदल स्थापित कर दिए गए हैं और उन्होंने कार्य करना आरम्भ कर दिया है । योजना को अभी अन्तिम रूप नहीं दिया गया है ।

डा. गोविन्द दास रिछारिया : सभापति जी, झांसी स्थित आयुर्वेदिक अनुसंधान केन्द्र 1983 में खोला गया था । मैं आपके द्वारा मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं कि उच्च कोटि के अन्वेषण कार्य के लिए यह केन्द्र स्थापित हुआ था, लेकिन इसमें जिस तरह का वायदा हुआ था उस तरह को कार्यवाही आज तक नहीं शुरू हुई है। मैं यह जानना चाहता हूं कि आगे इस योजना में और 8वीं योजना में आप क्या-क्या उसमें करने वाले हैं? जो आपका उत्तर है, वह पूरा नहीं है और जो उद्देश्य इस केन्द्र के खोलने का था वह अभी तक पूरा नहीं हुआ है ।

वस्त्र मंत्री तथा स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री (श्री राम निवास मिर्धा) : श्रीमान्, यह जो आयुर्वेदिक अनुसंधान के बारे में जो झांसी में केन्द्र है, उसके बारे में जो प्रश्न हैं मैंने उसमें उल्लेख किया है कि किस तरह से चलाने में तथा और तरीके से हमने इसमें मदद की है । मैं माननीय सदस्य ने जो भावनाएं इस प्रश्न द्वारा व्यक्त की हैं उनसे पूर्ण रूप से सहमत हूं कि इस केन्द्र को बहुत अच्छी तरह से चलाया जाए । कई मायनों में इस केन्द्र को हम ज्यादा तरजीह दे रहे हैं बनिस्बत दूसरे केन्द्रों के, क्योंकि वहां की एक विशेष परिस्थिति है और वहां पर काफी अच्छा काम किया जा रहा है । मैं माननीय सदस्य को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि जो भी यथा-संभव होगा इस केन्द्र के आगे विकास करने में, हम उसको पूरा सहयोग देंगे ।

डा. गोविन्द दास रिछारिया : सभापति जी, मैं मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि अनुसंधान, जो उच्च कोटि के वैज्ञानिक होते हैं, उनके द्वारा होता है । आपने जब से यह खोला है तब से उच्च कोटि के वैज्ञानिक आज तक वहां नियुक्त नहीं किए हैं । तो आपका अनुसंधान कार्य कैसे चलेगा? आपको इतनी बड़ी जमीन नेशनल हाईवे पर दी है उसमें भी आपने अभी तक जो औषधि पैदा करने का मामला था, वह अभी तक पैदा नहीं की है । तो मैं आपसे यह जानना चाहता हूं कि आप एक वैज्ञानिकों को समिति भेजिए और भेजकर के उसमें देखिए कि क्या-क्या कार्य होने हैं अनुसंधान के सिलसिले में । सबसे पहले स्टाफ आपका जो हो, वह इतनी उच्च कोटि का हो जो कि अनुसंधान में कार्य कर सके । उसे आप कब तक नियुक्त कर पाएंगे? इसमें भी विशेष ध्यान देने की कृपा करें और उसमें शीघ्रता करें ।

. . . .

श्री राम निवास मिर्धा : श्रीमान्, स्टाफ वहां पर मौजूद है । मेरे पास लिस्ट भी है, कोई अधिक जगह खाली हो ऐसी बात नहीं है । हमने पूरी कोशिश की है कि अच्छे से अच्छे जो दवा विशेषज्ञ हैं उनको वहां पर लगाया जाए ।

. . . . . .

औषधि निर्माण के संबंध में जो मैडिसनल प्लांट है उनके संबंध में विशेष तौर से ध्यान दे रहे हैं, । काफी बड़ी मात्रा में वहां पर काम किया जा रहा है और ज्यों ज्यों जरूरत होगी, जैसे मैंने माननीय सदस्य से पहले निवेदन किया, इस केन्द्र को बढ़ावा देने के लिए हम मदद करेंगे ।

. . .

श्री राम अवधेश सिंह : मान्यवर, मैं मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि यह जो केन्द्र खोला गया झांसी में उसके क्या-क्या लाभ हैं । पहले तो मैं यह जानना चाहता हूं कि नई औषधियों की खोज की जाएगी या जो आयुर्वेदिक संस्थान काम कर रहे हैं इस देश में उनमें भी बहुत सी मिलावटी दवाइयां बन रही हैं, जैसे अंग्रेजी दवाइयों के कुछ बैड इफैक्ट्स होते हैं उसी तरह से इनमें भी होते हैं क्योंकि ये अपना फारमूला तो लिखते नहीं हैं और जो मन में आता है मिला देते हैं . . .

श्री सभापति : फांसी तक ही प्रश्न सीमित है, उसी से संबंधित सवाल पूछिए ... (**व्यवधान**)

श्री राम अवधेश सिंह : मैं बैक ग्राउंड दे रहा हूं कि हमारे यहां बिहार में वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन है ... (**व्यवधान**)

श्री सभापति : उत्तर प्रदेश से बिहार मत जाइए। सीधा सवाल है फांसी का .. (**व्यवधान**)

श्री राम अवधेश सिंह : इस अनुसंधान केन्द्र का क्या-क्या काम है। नई खोज करना या आयुर्वेद भवन वाले जो दवा बना रहे हैं उन पर कंट्रोल भी यह करेगी ? जैसे च्यनप्राश जो बन रहा है उसमें आंवले के बदले कुछ और मिला देते हैं, द्राक्षासव में महुआ का रस मिला देते हैं। वह वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन में बनाया जाता है ... (**व्यवधान**) क्या उसकी भी जांच करायेंगे ? ...

श्री सभापति : वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन का इस क्वैश्चन से कोई संबंध नहीं है ... (**व्यवधान**)

श्री राम अवधेश सिंह : मैं कह रहा हूं कि यह मिलावट के बारे में भी कंट्रोल करेंगी और अगर करेंगी तो जो दवा आयुर्वेद भवन में बनती है ... (**व्यवधान**)

श्री सभापति : इसका वह आपको अलग से उत्तर भेज देंगे, वह प्रश्न का हिस्सा नहीं है ... (**व्यवधान**)

श्री राम अवधेश सिंह : आंवले के बदले अंगूर का रस मिला दिया जाता है ... (**व्यवधान**) महुआ का रस मिला दिया जाता है ... (**व्यवधान**)

श्री सभापति : इनको महुआ की याद आ रही है।

श्री राम निवास मिर्धा : श्रीमन, इस केन्द्र का क्या काम है, वह मैंने उत्तर में उद्धृत कर दिया है। कहां दवाइयां किस प्रकार की बन रही हैं, इसका इस प्रश्न से कोई संबंध नहीं है।

श्री राम अवधेश सिंह : जो दवाइयां बन रही हैं उन पर कंट्रोल करने के लिए कोई एफेक्टिव औजार बनाइए।

श्री सभापति : श्री वीरभद्र प्रताप सिंह।

श्री वीर भद्र प्रताप सिंह : श्रीमन, मैं यह जानना चाहता हूं ... (**व्यवधान**)

श्री राम अवधेश सिंह : मान्यवर, मेरे सवाल का जवाब नहीं आया ...

श्री सभापति : जो सवाल मेरी इजाजत के बिना पूछा जाएगा उसका जवाब नहीं दिया जाएगा। बस खत्म हो गया। आप बैठ जाइए ... (**व्यवधान**)

श्री राम अवधेश सिंह : मेरे पहले खंड का जवाब नहीं दिया ... (**व्यवधान**)

श्री सभापति : नहीं दिया तो नहीं दिया, आप बैठ जाइए। आपने तमाशा बना रखा है ... (**व्यवधान**)

श्री राम अवधेश सिंह : आप हमको प्रोटेक्ट करिए, आप मंत्री को प्रोटैक्ट कर रहे है ... (**व्यवधान**) आप मंत्री को टोक सकते हैं ... (**व्यवधान**)

श्री सभापति : मंत्री का सवाल आयेगा तो उनको रोकूंगा, आपका सवाल होगा तो आपको रोकूंगा, मेरे लिए सब बराबर हैं। लेकिन यह बदतमीजी, यह बेहूदी नहीं चलेगी। आप बगैर इजाजत के सवाल पूछेंगे तो मैं बिलकुल रोकूंगा और इजाजत नहीं दूंगा।

श्री वीरभद्र प्रताप सिंह : सभापति महोदय, मैंने व्यापक जानकारी प्राप्त करने के लिए इस देश के प्रमुख आयु वैदिक अनुसंधान केन्द्रों का स्वतः जाकर अध्ययन

किया । मैंने मदन मोहन मालवीय जी ने जो बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में और पटियाला में जो प्रमुख अनुसंधान केन्द्र हैं आयुर्वेद पर मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि अभी भी यह इतना उन्नत सिस्टम है फिर भी इंडिजनस कायम है । रिछारिया साहब ने बहुत ही गंभीर प्रश्न किया। मैं मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं कि क्या आप चाहते हैं कि इंडिजनस रह कर यह सारा विज्ञान लुप्त हो जाए या क्या सचमुच एक अच्छा केन्द्र भारतवर्ष में कायम करना चाहते हैं आयुर्वेद पर ? मैंने एलोपैथी का बहुत अध्ययन किया है । एलोपैथी की एक-एक ड्रग पर बहस होती है । आयुर्वेद के लिए एक रिसर्च सैन्टर भी भारतवर्ष में नहीं खोला गया है जिससे मालवीय जी की इच्छा पूर्ण हो सके । विश्वविद्यालय लुप्त होता जा रहा है । पटियाला के महाराजा के मरने के बाद धीरे-धीरे यह लुप्त होता जा रहा है । आप कम से कम एक तो कायम कर दीजिए ?

श्री सभापति : आप का प्रश्न सीधा है कि क्या आप इनको प्रोत्साहन देंगे ?

श्री वीर भद्र प्रताप सिंह : एक अनुसंधान केन्द्र खोला जाए तो उसके विज्ञान को लुप्त होने से बचाए ? क्या आप इस पर विचार करेंगे ?

श्री राम निवास मिर्धा : एक संस्था नहीं कई अनेक संस्थायें हैं जो आयुर्वेद पर शोध कार्य कर रही हैं । एक सैन्ट्रल कौंसिल फार रिसर्च आयुर्वेद एंड सिद्धा है इसके अंतर्गत बहुत अच्छे कार्य हो रहे आयुर्वेद शोध के सिलसिले में । 6 सैन्ट्रल रिसर्च इंस्टीटयूट चल रहे हैं । 8 रीजनल रिसर्च इंस्टीट्यूट चल रहे हैं और 10 रीजनल इंस्टीट्यूट सैन्टर्स चल रहे हैं । इस तरह से कई शोध योजनायें चल रही हैं । फिर भी माननीय सदस्य से सहमत हूं कि जितना आयुर्वेद को प्रोत्साहन देना चाहिए शोध के द्वारा और अन्य के द्वारा उतना नहीं हो रहा है । इसके लिए जो क्षेत्र में काम करते हैं उनको भी मदद करनी पड़ेगी और सरकार को भी इसमें ज्यादा प्रयास करना पड़ेगा ।

SHRI G. SWAMINATHAN: Sir, the hon. Minister said there are Central Councils for research in Ayurveda and Siddha. There are many centres. Siddha, as you know, is one that is peculiar to Tamil Nadu and it is as ancient as Ayurveda. Unfortunately there are not many Siddha centres. There is only one Siddha centre in Madras, even though Siddha is prevalent and mainly originated from Tamil Nadu. All the world over, including countries like Sri Lanka, Malayasia, Singapore and in many other countries. Siddha is widely prevalent. There are these systems; Ayurveda, Siddha and Unani. There are many centres for Ayurveda but there is only one for Siddha. I would like to know from the hon. Minister whether he will not regionalise the centre in Siddha only in Tamil Nadu but will also start more such centres because there are many remedies in Siddha which are very effective and which give better results in some of the ailments for which Allopathic system has not been able to find out a remedy. I would like to have the reaction of the hon. Minister to my point.

SHRI RAM NIWAS MIRDHA: As I mentioned earlier, there is Central Council for Research in Ayurveda and Siddha.

MR. CHAIRMAN: Both are there; Siddha is not left out.

SHRI RAM NIWAS MIRDHA: And if Siddha has not made much progress, I would say even Ayurveda has not made much progress as it should. Our effort is that both the systems should be made to work in a very proper way and by research etc., we come to some finding which can help the people to take to Ayurveda and Siddha systems. It is our endeavour and we will continue to do so.

SHRI G. SWAMINATHAN: My point is, there are centres for Ayurveda and Siddha. For various centres, Council is one for Siddha and Ayurveda; but all the centres are only

for Apurveda and not Siddha. Research for Ayurveda only is being done and no special research in Siddha has been taken up in all the centres except one centre in Madras. I would like to know ...

MR. CHAIRMAN: It is both in Tamil Nadu and Kerala. Siddha is in Kerala also.

DR. YELAMANCHILI SIVAJI: Sir, Ayurvedic medicines are supposed to contain several metals like gold and at times some other dangerous metals like lead, arsenic and others. Are there laboratories in the research centres, like histological laboratory, pathological laboratory, bio-chemical laboratory and bacteriological laboratory....(Interruptions). Should I repeat my question? Sir, Ayurvedic medicines are supposed to contain several metals like gold and at times like some other dangerous metals as lead, arsenic and others. These drugs have got an impact on the human body.

Therefore, in the Jhansi research centre, what laboratory facilities are available like histological laboratory, pathological laboratory, biochemical laboratory, bacteriological laboratory, virological laboratory etc. to evaluate the impact of the drugs on the human body?

SHRI RAM NIWAS MIRDHA: Sir, I have mentioned in my answer which are the thrust areas and programmes which this centre will undertake. Four points have been mentioned. One of the more important points is about medicinal plants in this area. It is a central thing for a lot of other stores for the whole Council. There are so many centres all over the country for Ayurveda research. But this centre is for the specific purpose which have mentioned here and all the instruments that are necessary for this purpose are there.

DR. YELAMANACHILI SIVAJI: My question has not been answered whether the laboratory facilities are available or not as far as Ayurveda drugs are concerned.

SHRI RAM NIWAS MIRDHA: If the hon. Member puts a separate question, I will answer. I have mentioned what is done in the Jhansi centre.

MR. CHAIRMAN: It does not arise out of this question. Gold is used in allopathy also. It is sometimes used in homoeopathy as well.

SHRI G. SWAMINATHAN: It is used in Siddha also.

Study conducted at the National Institute of Virology, Pune on professional blood donors

*267. SHRI SHEO KUMAR MISHRA:
SHRI KAPIL VERMA:†

Will the Minister of HEALTH AND FAMILY WELFARE be pleased to state:

(a) whether according to a particular study conducted at the National Institute of Virology, Pune, nearly 5 per cent of professional blood donors were found to be infected with AIDS virus;

(b) if so, what is Government's reaction thereto and what action has been taken in this regard;

(c) whether the ICMR has suggested the screening of all blood donors; and

(d) if so, what action has been taken on this recommendation?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY WELFARE (KUMARI SAROJ KHAPARDE): (a) No, Sir.

†The question was actually asked on the floor of the House by Shri Kapil Verma.